भजन

तर्ज–तेरे दर को छोड़

महबूब हमारे बैठे है
आ आ के सजदा कर जाओ

1–वह रहमत भरी निगाहों से,इक इक की और निहार रहे
तू पी ले जाम इश्क वाला, वो प्याला थामे बैठे है

2–ये नजरें कयामत ढा ही रही,और नूरी झलक दिखला ही रही
लेने वालों ले भी लो, वो आप लुटाने बैठे है

3–इस मेहर की कोई हद ही नही,ये चौदह तबक से निराली है
मेहर बरसाने बैठे हैं,आ आ के झोलियां भर जाओ

4–मेरे दिलबर की कोई रीस नही, कुछ दे देने के मूड़ में है
पीछे मत रहना दिल वालों, दिलदार रिझाने बैठे है